ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-12 No.03 December 2020

नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित हिजड़ा समुदाय

पूनम वर्मा पीएच.डी. शोधार्थी हिन्दी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू

भारतीय समाज में आमतौर पर दो लोगों की भागीदारी मानी जाती है- पुरुष और स्त्री। इनके अलावा भी प्रकृति ने मनुष्य के रूप में अन्य प्राणियों की भी रचना की है, जिनकी समाज में इन्हें स्वीकृति नहीं मिली है, इसलिए ये लोग अपना अलग ही समाज बनाकर रहते हैं। ''हमारे समाज में इन्हें हिजड़ा, किन्नर, ख्वाजासरा, जनखा, छक्का, अरावनी, खुसरा, पावैया, कोती आदि नाम दिए हैं।''

लेखिका ने अपने उपन्यास में तृतीय समुदाय के लिए केवल 'हिजड़ा' शब्द का प्रयोग किया है। इस संदर्भ में वह अपनी पुस्तक 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय' में लिखती हैं, ''हिजड़ा' शब्द के बहुत करीब दो शब्दों ने मुझे और भी आश्वस्त किया। एक शब्द था 'हिजरत', जिसका एक अर्थ होता है संकट के समय जन्मभूमि त्यागना, देश त्याग और दूसरा शब्द है 'हिज्र' जिसका अर्थ है जुदाई या वियोग। विवशता में अपनी जन्मभिम, मातृभूमि या परिवार से वियोग इन हिजड़ों की नियति होती है, इसलिए हिजड़ा शब्द ही इनकी दुर्दशा और विचारणीय स्थिति का सटीक द्योतक है। 'किन्नर' शब्द सर्वथा अनुपयुक्त है इनके लिए।''

''अभी कुछ वर्ष पहले माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में उपरोक्त शब्दों के स्थान पर 'थर्ड-जेंडर' के नाम से संबोधित किया है। इसलिए अब इस समुदाय के लोगों को 'थर्ड जेंडर' के नाम से पुकारा जाएगा।'' परन्तु समाज के भीतर उभयलिंगियों की उपस्थिति ने इस शब्द की अर्थव्याप्ति को धक्का दिया। अब हिजड़ों के समुदाय में भी अपनी बात को कहने का साहस रखने वाले लोग आ रहे हैं जो अपने आपको 'ट्रांसजेंडर' कहलाना पसंद करते हैं। नीरजा माधव का उपन्यास 'यमदीप' हिजड़ा समुदाय की समस्याओं पर आधारित है। इसमें लेखिका ने हिजड़ों के जीवन की मार्मिक दास्तान को चित्रित किया है। उपन्यास की भूमि बनारस का वरुणा पार का इलाका है। वरुणावती जैसे स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है ठीक उसी प्रकार उसके दलदल, कीचड़ां के लिथड़न में यह हिजड़ा समुदाय अपना वजूद तलाशता है।

लेखिका ने उपन्यास का नाम 'यमदीप' एक प्रतीक के रूप मे चुना है। तीसरे लिंग में जनमें मनुष्य और यमदीप में बहुत समानता है जिस प्रकार 'यमदीप' के प्रज्जवलित होने पर पूजा-अर्चना नहीं होती, उसी प्रकार 'तीसरे लिंग' के शिशु के जन्म पर किसी तरह का कोई हर्षोल्लास नहीं होता। 'यमदीप' को जलाने के बाद उसे मुड़कर कोई नहीं देखता। उसी प्रकार तीसरे लिंग में जन्में बच्चे को निर्वासित करने के बाद उसकी खोज-खबर नहीं ली जाती। इस प्रतीक के माध्यम से 'तीसरे लिंग' की समस्त त्रासदी को उपन्यास में व्यक्त किया गया है।

हम उस समाज का हिस्सा हैं जो किसी अशक्त को तो तकलीफ समझ कर घर में जगह दे देता है परन्तु किसी अलिंगी को अपने घर रखना प्रतिष्ठा के खिलाफ समझा जाता है। मध्यवर्गीय परिवार में मेजर के घर जन्मी नंदरानी का बचपन ऐसी ही दास्तां से गुजरता है, जिसमें दूसरी संतान के रूप में उसका जन्म होता है। नंदरानी को सख्त हिदायत दी जाती है कि किसी के भी सामने 'छोटे बाहर (मूत्र विसर्जन) या बड़े बाहर (शोच) न जाए। नंदरानी विद्यालयी शिक्षा के दौरान ही अपने शारीरिक बदलाबों को महसूस करने लगती है उसकी सहेलियाँ उसके उठने-बैठने, आचार-व्यवहार पर उसे टोकती हैं।

हिजड़ों के शारीरिक बदलाव के संबंध में लेखिका अपनी पुस्तक 'किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य कुछ सत्य)' में लिखती है ''स्वाभाविक रूप से पैदा हुए हिजड़ों में अकसर स्त्री-पुरुष दोनों के लक्षण जन्मजात रूप से पाये जाते हैं जो उनकी किशोरावस्था तक विकसित हो सामने आने लगते हैं।... उदाहरण के लिए स्तनों के उभार के साथ दाढ़ी मूंछों का उगना, आवाज़ का भारी हो जाना पर चाल में थोड़ी स्त्रियोचित लचक आ जाना। ये कुछ बाह्य लक्षण हैं जो शरीर के भीतर के असन्तुलित हारमोन्स के कारण परिलक्षित होने लगते हैं।'' नंदरानी में भी कक्षा आठ तक पहुंचते-पहुंचते अन्य स्त्रियोचित अंगों के उभार

Copyright @ 2020 Authors

और विकास के साथ ही चेहरे पर श्याम वर्ण के रोएँ भी उभरने लगते हैं। सब कुछ छिपाकर सामान्य जीवन जी सकने की उसकी और माता-पिता की कल्पना चकना चूर होने लगती है। कक्षा आठ की पढ़ाई पूरे होने के बाद उसके पिता दुखी मन से कहते हैं, ''बेटा नंदरानी हाईस्कूल का प्राइवेट फार्म भर दो।'' डॉक्टर बनने का सपना देखने वाली नंदानी से उसके पिता स्कूल छुड़वा देते हैं। स्कूल छुड़वाने के पीछे छिपी उनकी विवशता तथा उनकी कायरता को दिखाने का प्रयास लेखिका ने उपन्यास में किया है।

हिजड़ों की सामाजिक स्वीकार्यता का प्रश्न, इस उपन्यास का केन्द्रीय प्रश्न है। यदि हिजड़े के माता-पिता उसे घर रखना भी चाहें तो भी समाज उन्हें रहने नहीं देगा। ''एक बलात्कारी हत्यारे और आतंकवादी को कोई परिवार प्रश्रय दे तो वह आज के समय में समर्थवानों में गिना जाएगा। लोग परिवार के लोगों को भैया-चाचा कहते हुए धन्य होंगे पर एक प्राकृतिक त्रुटि सम्पन्न, उत्पादकता को छोड़ हर मायने में समर्थ-मन व्यक्ति को चाहते हुए भी माँ-बाप प्रश्रय नहीं दे सकते, देने पर बहिष्कार व निर्वासन जैसा अघोषित दंड भुगतना पड़ सकता है।'' उपन्यास में भी नंदरानी अर्थात् नाजबीबी जब हिजड़ों के मोहल्ले में रहने के लिए छोड़ दी जाती है तब नाज के माता-पिता से महताब गुरु का संवाद इस यथार्थ की पुष्टि करता है, ''आप इस बस्ती में रह नहीं सकते... दुनिया में बदनामी और हँसी-हँसारत के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बरदाशत कर पाएँगे और न आपके परिवार के लोग। लूली-लंगड़ी होती यह, कानी कोतर होती, तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे...।''

समाज और सामाजिकता का भय ऐसा है कि उसे झेल पाने की ताकत अभी देखने को नहीं मिली है। रिश्ते-नाते सिकुड़ने का भय, तथाकथित अपमान का भय वे मुद्दे हैं जिनके कारण अपने माँ-बाप से दूर, घर से बेघर हो जलालत की जिंदगी वे झेलने के लिए अभिशप्त हैं। महताब गुरू की बेचारगी को लेखिका ने इस प्रकार व्यक्त किया है, ''किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़े को पढ़ते-लिखते देखा है, किसी कुरसी पर हिजड़ा बैठा है ? पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्टरी में... किसी में भी ? ... अरे इसकी दुनिया यही है... घर-परिवार सबसे छुड़ाकर इस बस्ती में नाचने-गाने के लिए फेंक जाती है हमारी किस्मत। कोई कुछ नहीं करता... न समाज और न सरकार आखिर कहाँ जाएं हिजड़े।'' यह सच है कि उपन्यास लिखने से पूर्व हिजड़ों के लिए कोई आरक्षण नहीं था। किन्तु बाद में समाज की सोच बदली है। चुनाव में हिजड़ों के लिए भी सीट है। यद्यपि हाल के दशकों में कई एक किन्नरों के राजनीति में आने से इनकी चर्चा होनी आरम्भ हुई है ''कुछ वर्षों पहले सवोच्च न्यायलय द्वारा इन्हें तीसरे लिंग के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए तमाम सुविधाएँ प्रदान करने का निर्देश दिया गया वहीं चेन्नई में केवल हिजड़ों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यालय खोला गया है।''

कहने को हम इक्कीसवीं सदी में रह रहे हैं परन्तु आज भी हिजड़ों से उपेक्षितों सा व्यवहार किया जाता है। समाज से तो यह लोग उपेक्षित होते ही हैं अपने परिवार के लोग भी इनसे घृणा करते हैं। नाजबीबी अपने ही भाई द्वारा उपेक्षा का शिकार होती है। वह परिवार के लोगों से कभी-कभी टेलीफोन पर ही बात कर लेना चाहती है परन्तु उसका सगा भाई नंदन उससे धमकी भरे अंदाज में कहता है- देखो तुम्हारा बार-बार टेलीफोन करना या हमारे परिवार से सम्बन्ध रखना हमारी इज्जत को बढ़ाता नहीं, उल्टे तुम्हें ही दुख होता है। तुम परिवार में रह नहीं सकती, हम सब भी नहीं रख सकते। इसलिए यह समझ लो कि तुम अनाथ हो। कोई नहीं तुम्हारा दुनिया में।'' जब अपना सगा भाई ही ऐसा व्यवहार करे तो हम समाज की वितृष्णा के भाव की क्या कल्पना कर सकते हैं।

इनको लेकर समाज में पूर्वाग्रह आधारित मान्यताएँ हैं जिसके कारण इनसे अछूतों सा व्यवहार किया जाता है। इनकी वास्तविकता से समाज अभी भी अछूता है। उपन्यास में पत्रकार मानवी जब हिजड़ों पर फीचर लिखना चाहती है तो उसके ऑफिस के लोग उस पर हँसते हैं। लोगों में जो धारणाएँ प्रचलित हैं इस समुदाय के प्रति उसका चित्रण लेखिका पात्रों के माध्यम से करती है, ''उनके घरों में कोई चला जाए तो वह आपरेशन करके चेला बना लेते हैं... खोलते तेल में पड़े चाकू से उनका कोई सीनियर हिजड़ा पुरुष जननांग को एक झटके में काट डालता है।'' इस संबंध में लेखिका स्वयं कहती है, ''यह तथ्य भी पूरी तरह से निराधार है क्योंकि जिस काम को बड़े-बड़े दक्ष डॉक्टर भी करने में थोड़ा हिचकिचाते हैं, या च्े मनकव भ्मतउंचीतवकपजमे

 Copyright @ 2020 Authors

के मामले में सर्जरी द्वारा लिंग परिवर्तन करते हैं, तो भी डॉक्टरों की एक टीम होती है। मरीज को बेहोश करने के लिए एनेस्थिसिया का डॉक्टर अलग होता है जो चेक करता है कि रोगी को किस मात्रा में एनेस्थिसिया देना है और कितने समय तक बेहोशी की स्थिति में रखा जा सकता है उसे। साथ ही तमाम आधुनिक शल्यक्रिया के औज़ार, दवाइयों आदि की भी आवश्यकता पड़ती है। क्या अशिक्षा और गुमनामी की ज़िन्दगी जीने वाले इन हिजड़ों से ऐसे आपरेशन की अपेक्षा की जा सकती है?'' हिजड़ा समुदाय को न केवल मुख्यधारा से बाहर रखा गया है अपितु इनके प्रति अफवाहों को भी जनता में भर दिया गया है।

हिजड़ों की मनोदशा, स्नेह तथा उनमें ममत्व भाव को भी लेखिका ने इस उपन्यास में दिखाया है। पागल स्त्री को प्रसव पीड़ा से तड़पते देखकर गली के मनचले लड़के और छत से तमाशा देखती औरतें जब कुछ नहीं कर पातीं तब नाजबीबी अपने साथियों के साथ मिलकर पगली का प्रसव करवाती हैं 'अब कोई पूछनहार नहीं इसका तो क्या हम भी छोड़ जायेंगे ? अरे हम हिजड़े हैं, हिजड़े इन्सान हैं क्या जो मुंह फेर लें।'' नाजबीबी उस पगली की संतान को छिपते-छिपाते अपने साथ हिजड़ों की बस्ती में ले आती है। सोना की परवरिश में भी नाज को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। सोना के दाखिले के वक्त स्कूल में जाते ही सब अध्यापिकाएं आपस में उसे दिखा-दिखाकर हँसती हैं। बरामदे में से गुजरते हुए एक अध्यापिका की आवाज़ आती है, ''शायद विद्यालय की छठी मना रही हैं बड़ी बहनजी'' इस पर नाज तिलमिलाकर जवाब देती है, ''जब हम धंधे पर नहीं होते, बहनजी, तो इस तरह का मजाक हमारे सीने में गोली की तरह लगता है। हम आसमान से तो नहीं टपके हैं न ? आप ही की तरह किसी माँ की कोख से जन्में हैं। हमें तो अपने आप दुख होता है इस जीवन पर। आप लोग भी दुःखी कर देते हो।''

आधुनिकीकरण से हिजड़ों पर आर्थिक संकट आ रहा हैं पहले संयुक्त परिवार होने पर बच्चे अधिक होते थे तो हिजड़ों का आना शुभ माना जाता था। परन्तु जैसे जैसे परिवार एकल हो रहे हैं लोग फ्लैटों में रहने लगे हैं। बहुमंजिली इमारतों में इन्हें कोई घुसने नहीं देता। पेट की आग बुझाने के लिए इन हिजड़ों को कई अनैतिक कर्म भी करने पड़ते हैं। किसी समलैंगिक सामान्य पुरुष के साथ ये कुछ रुपयों के लिए शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए विवश होते हैं। ''समलैंगिक भूख से बेचैन कोई-कोई समर्थ पुरुष जो इनका कोती (स्त्री वेश्याधारी हिजड़ा) के रूप में भरण-पोषण कर सके, इसके लिए अपनी इच्छित या अनिश्चित स्वीकृति कोई भी हिजड़ा दे सकता था। कुछ तो छिपकर वेश्यावृत्ति की तरह इसे अपना चुके थे।'' चोरी छिपे इस वृत्ति को अपनाने वाले इन हिजड़ों में अनेक प्रकार की अप्राकृतिक यौन-सम्बन्ध-जनित रोग (ैमगनंससल ज्तंदउपजजमक क्मेमेंम) पैदा होते रहते हैं जिनकी एकमात्र परिणति इनकी मृत्यु होती है। इस प्रकार की इस वेश्यावृत्ति को इनके समुदाय में पाप की क्षेणी में रखा गया है।

उपन्यास में लेखिका ने हिजड़ों की जिंदगी से जुड़े तमाम सच जिनसे समाज बेखबर है उसे सामने लाने का प्रयास किया है। हिजड़े किसी भी धर्म से आएँ परन्तु इस बस्ती में आने के बाद अपना-अपना धर्म मानते हुए भी उन्हें बेसरा माता में आस्था रखनी होती है। बेसरा माता हिजड़ों की देवी मानी जाती हैं और उनकी सवारी है मुर्गा। मानवी द्वारा पूछने पर महत्ताब गुरू बताते हैं, ''हम लोगों की एक बेसरा माता है यानी हिजड़ों की देवी। उनका मंदिर अहमदाबाद में है। वही गुजरात में। तो वर्ष में एक बार वहां हम सब लोग जुटते हैं। भंडारा करते हैं, नाचते-गाते हैं। यानी एक साथ दो-चार दिन रहते हैं।''

इसी के साथ लेखिका ने अनेक सांकेतिक शब्दों का प्रयोग 'यमदीप' उपन्यास में किया है जैसे मित्र रखैल रखने की परंपरा जिसे उनकी भाषा में 'गिरिया' कहा जाता है। नवजात शिशु लड़का (टेपका), लड़की (टेपकी), पुरुष वेशधारी हिजड़े के लिए (कड़ेताल), कंजूस यजमान (बीला), ढोलक (डामरी), सौ रुपये का नोट (बड़मा), पत्नी (निहारन), बीड़ी या सिगरेट (धौकनी), माँ (सुड्डी), पिता (सुड्डा), टेलीफोन (कनबासी), परिवार नियोजन (बधिया) आदि।

निष्कर्षः निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि यदि परिवार के लोग और माता-पिता दृढ़ प्रतिज्ञा ले कि हिजड़े के रूप में पैदा हुए अपने बच्चे को स्वयं से अलग न करके उसे शिक्षित और रोज़गार में लगायेंगे तो इस समुदाय की अनेक समस्याएँ अपने

 Copyright @ 2020 Authors

आप समाप्त हो जायेंगी। भविष्य में हिजड़ा समुदाय के भीतर भी अपने आत्म-सम्मान की रक्षा और अधिकारों के प्रति जब चेतना जागृत होगी और वे इसके लिए मुखर होंगे तो उनकी लड़ाई एक सार्थक लक्ष्य तक अवश्य पहुँचेगी और समाज उन्हें स्वीकार भी करेगा।

संदर्भ :-

1.**आशीष कुमार 'दीपांकर', भारतीय समाज में किन्नरों का यथार्थ, पृ. 46**

2.**नीरजा माधव, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), पृ. 10**

3.**संपादक : डॉ. इकरार अहमद, किन्नर विमर्श : साहित्य ने आईने में**

4.**वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़, 2017, भूमिका से**

5.**नीरजा माधव, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), पृ. 21**

6. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 61 त्ळ।छप्र्क् ।ज् ।ठभ्छ।ट जभ्म्।ज्त्म्ळत्।डडम् डन्

7. संपादक : डॉ. एम.फीरोज़ खान, थर्ड जेण्डर पर केन्द्रित हिन्दी का

8.**प्रथम उपन्यास 'यमदीप', पृ. 50-51**

9. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 93

10. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 94

11.**नीरजा माधव, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), पृ. 32**

12. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 82

13. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 158

14. नीरजा माधव, किन्नर नहीं हिजड़ा समुदाय (कुछ तथ्य, कुछ सत्य), पृ. 25

15. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 12

16. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 50

17. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 50

18. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 164

19. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 42

 Copyright @ 2020 Authors